स. ग्रो. वि./एफ.डी./21-86/38699.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. एक्मी इन्जिनियरिंग प्लाट नं. 4 (इस्ट इण्डिया के सामने) एन ग्राई.टी. फरीदाबाद के श्रमिक श्री रामबदन यादव, पुत्न श्री बलराज यादव मकान नं. 2664 जवाहर कालोनी, एन.ग्राई.टी. फरीदाबाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इस में इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीचोगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं,

इसलिए; अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपद्यारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यशाल इस के द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415-3-श्रम/68/15254, दिनांक 20 जून 1978 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद की विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायानिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है;

क्या श्री रामबदन यादव की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है? सं. श्रो.वि./पानी/47-86/38706.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं दी. सहकारी ऋण एवं सेवा समिति लि॰ चोचड़ा (श्रसन्ध) जिला करनाल के श्रमिक श्री प्रेमचन्द, पुत्र श्री ग्रजुन लाल, गांव सालवन, तहसील ग्रसन्ध, जिला करनाल तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 3(44) 84-3-श्रम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984 द्वारा उक्त अधिसूवना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, अम्बाला की विवाद अस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय- निर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद अस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री प्रेम चन्द की सेवाम्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत की हकदार है ? दिनौंक 16 म्रक्तूबर, 1986

सं० थ्रो॰ वि०/भिवानी/104-86/38735.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि परिवहन श्रायुक्त, हरियाणा, चण्डीगढ़, (2) जनरल मैनेजर, हरियाणा रोड़वेंज, भिवानी के श्रमिक श्री जय सिंह कल्डक्टर नं 55,पुत्र श्री माईधन, गांव बालकी ढाणी, डा॰ बहल, जिला भिवानी, तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतू निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं।

इसलिए, ग्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रिष्टिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिष्टिसूचना सं० 9641-1-श्रम-78/32573, दिनौंक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी श्रिष्टिसूचना की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम-न्यायालय रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिश्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रीमिक के बीच या तो दिवादग्रत मामला है या उन्त दिवाद से मुसंगत श्रथवा सम्बन्धित है :--

क्या श्री जय सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं॰ मो॰ वि॰/एफ॰डी॰/140-86/38743.—-पूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै॰ शंकला इन्जिनियरिंग वर्कस, 66/24, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री छवीनाथ पुत्र श्री छिट्टू मार्फत श्री सुनेहरी लाल, लेवर लीडर श्रहिरवाड़ा, बल्लवगढ़, तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई मौद्योगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निदिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, प्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947, की घारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त प्रिधिसूचना की घारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यावालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा भामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु मिर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्रो छवीनाथ की सेवाघों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?